चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	03.07.2020	04	01-05

कृषि : एचएयू ने जारी की किसानों के लिए हिदायतें, बाजरा एलर्जी और डायबिटीज में भी सहायक

एचएयू ने बाजरे की दो बायोफोर्टीफाइड एचएचबी 299 और 311 किस्म की विकसित, 19 क्विंटल प्रति एकड़ तक होती है पैदावार

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू ने बाजरा की दो और किस्में विकसित की हैं। इनमें बायोफोर्टीफाइड एचएचबी 299 और 311 किस्म शामिल हैं। दोनों किस्मों की खासियत है कि यह मात्र 80 दिन में पककर तैयार हो जाती है। एचएयू किसानों को बाजरे की फसल के प्रति जागरूक कर रहा है। उक्त किस्म लोगों के अंदर एलर्जी से लेकर डायबिटीज रोकने में भी सहायक है।

प्रदेश में मानसून जल्द दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय आ गया है। बाजरे की

बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। एचएयू के वीसी प्रो. केपी सिंह ने किसानों से आह्वान किया कि किसान अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरा की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरा का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं।

एचएयू की तरफ से अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

एचएयू के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि एचएयू ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टिफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है, जिनमें लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एचएचबी 299 एक अधिक लौह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। एच एच बी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमशः 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एचएच बी-223, एच एच बी 197, एच एच बी-67 (संशोधित), एचएचबी 226, एचएचबी 234, एचएचबी 272 शामिल हैं।

बढ़ रही है बाजरे की डिमांड ... क्योंकि यह है खूबियों से भरा

- बाजरे में मुख्यतः 12.8 प्रतिशत प्रोटीन 4.8 ग्राम वसा 2.3 ग्राम रेशे 67 ग्राम कार्बोहायड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैल्शियम (16 मिली ग्राम), लौह (6 मिली ग्राम), मैग्नीशियम (228 मिली ग्राम), फॉस्फोरस (570 मिली ग्राम), सोडियम (10 मिली ग्राम), जिंक (3.4 मिली ग्राम), पोटेशियम (390 मिली ग्राम), कॉपर(1.5 मिली ग्राम), पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाए जाते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	03.07.2020	01	01

प्रदेश में कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए किसानों को मिलेंगे जैव उर्वरक

राजधानी हरियाणा | राज्य में कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए मृदा स्वास्थ्य में सुधार हेतू जैव-उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए हैफेड ने हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के साथ हैफेड के बिक्री केंद्रों, सहकारी विपणन समितियों और पैक्स के माध्यम से किसानों को अच्छी गुणवत्ता के जैव-उर्वरकों को उपलब्ध करवाने को निर्णय लिया है। यह जैव-उर्वरक हैफेड, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और हैबिटेट जीनोम इम्प्रूवमेंट प्राइमरी प्रोड्यूसर कंपनी के बीच त्रिपक्षीय समझौता के तहत उपलब्ध करवाए जाएंगे। खेप के आधार पर व्यवस्था के माध्यम से हैफेड द्वारा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के जैव उर्वरक उत्पादन और प्रौद्योगिकी केंद्र, हिसार में जैव-उर्वरक केंद्रों जैसे अजोतोबैक्टोर, राइजोबियम और पीएसबी आदि का अच्छी गुणवत्ता वाला जैव उर्वरक विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों के गुणवत्ता पर्यवेक्षण के तहत बेचा जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	03.07.2020	11	02-04

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान

■ हकृवि ने किसानों के लिए बाजरे की फसल संबंधी जारी की

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजरा हरियाणा एवं पुरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें।

हकृवि कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह ने कहा कि बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बतया कि बाजरे की फसल सितम्बर के अन्त या अक्तूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

हकृवि द्वारा अनुमोदित बाजरे की नई बायोफोटीफाइड किस्म।

हकृवि द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

हकृवि अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोटीर्फाइड किस्मों का अनुमोदन किया है। जिनमे लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच एच बी 299 एक अधिक लौह युक्त 73 पीपीएम संकर बाजरा किस्म हैं। इसकेदानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एचएचबी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त 83 पीपीएम संकर बाजरा किस्म हैं। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमशः 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एचएचबी-223, एचएचबी 197, एचएचबी-67 (संशोधित), एचएचबी 226, एचएचबी 234, एचएचबी 272 शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	03.07.2020	04	03-06

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान: प्रोफैसर के.पी. सिंह

हकृवि ने किसानों के लिए बाजरे की फसल संबंधी जारी की हिदायतें

हिसार, 2 जुलाई (ब्यूरो): प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं।

बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आह्वान किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बताया कि बाजरे की फसल सितम्बर के अंत या अक्तूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों की फाइल फोटो।

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमें लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच.एच.बी. 299 एक अधिक लौह युक्त (73 पी.पी.एम.) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमश: 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एच.एच.बी. 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पी.पी.एम.) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमश: 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रख-रखाव करने पर एच.एच.बी. 299 व एच.एच.बी. 311 क्रमश: 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच.एच.बी.-223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी.-67 (संशोधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 शामिल हैं।

बढ़ रही है बाजरे की डिमांड

बाजरे में मुख्यत: 12.8 प्रतिशत प्रोटीन 4.8 ग्राम वसा 2.3 ग्राम रेशे 67 ग्राम कार्बोहाइड्रेट एवं खनिज तत्त्व जैसे कैल्शियम (16 मिलीग्राम), लौह (6 मिलीग्राम), मैग्नीशियम (228 मिलीग्राम), फॉस्फोरस (570 मिलीग्राम), सोडियम (10 मिलीग्राम), जिंक (3.4 मिलीग्राम), पोटाशियम (390 मिलीग्राम), कॉपर (1.5 मिलीग्राम) पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से अधिक आवश्यक एमीनो अम्ल पाए जाते हैं। बाजरे के दानों का सेवन सूजन रोधी, उच्च रक्तचाप रोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें इसमें पाए जाने वाले एंटी-ऑक्सीडैंट यौगिक हृदयाघात के जोखिम एवं आंत्र के सूजन को कम करने में मदद करते हैं। बाजरा में उपयुक्त वर्णित खाद्यान्न फसलों के मुकाबले सूखा, निम्न उपजाऊ क्षमता, उच्च लवण उक्त भूमि एवं उच्च तापमान के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो कि सिलियक, असहिष्णुता, स्व-प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी, और आंतों की पारगम्यता बीमारी का मुख्य कारण है। बाजरे का सेवन टाइप -2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है। इसकी इन्हीं विशेषताओं के कारण इसे 'नुट्री सीरियल' नाम दिया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	02.07.2020	--	--

हकृवि ने किसानों के लिए बाजरे की फसल संबंधी जारी की हिदायतें

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान : कुलपति केपी सिंह

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खादान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आह्वान किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बताया कि

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों के फाइल फोटो।

बाजरे की फसल सितम्बर के अन्त या अक्टूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

ऐसे करें खेत की तैयारी

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि बाजरे की बिजाई जुलाई माह के प्रथम पखवाड़े में उचित होती है, किंतु बारानी इलाके जो बारिश पर निर्भर करते हैं, वहां मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसके अलावा 10 जून के बाद 50 से 60 मिलीमीटर वर्षा होने पर भी बिजाई की जा सकती है। उन्होंने कहा कि किसान खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें और बाद में एक या दो जुताई देशी हल से करें। इसके बाद फोरन सुहागा लगाकर अच्छी तरह तैयार करें ताकि घास-फूस न रहे। बारानी क्षेत्रों में वर्षा से पहले खेत के चारों तरफ खूब मजबूत मेढ़ बनाएं ताकि बारिश का पानी खेत में ही जमा हो जाए और आगामी फसल के भी काम आ सके। बीजोपचार अवश्य करें किसान।

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमें लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एचएचबी 299 एक अधिक लौह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एचएचबी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमशः 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच एच बी-223, एच एच बी 197, एच एच बी-67 (संशोधित), एच एच बी 226, एच एच बी 234, एच एच बी 272 शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	02.07.2020	--	--

चिकित्सक भगवान का दूसरा रूप : प्रोफेसर के.पी. सिंह

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 2 जुलाई : चिकित्सक भगवान का दूसरा रूप होता है। मौजूदा समय में जारी कोरोना महामारी की विषम परिस्थितियों में चिकित्सकों ने इसे ओर सार्थक सिद्ध भी कर दिया है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस की बधाई देते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस को एक जुलाई को देश के महान चिकित्सक और पश्चिमी बंगाल के दूसरे मुख्यमंत्री डॉक्टर बिधानचंद्र रॉय की जन्मतिथि और पुण्यतिथि के अवसर पर उनकी याद में मनाया जाता है। इसके अलावा यह खास दिन स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करने वाले उन तमाम चिकित्सकों को समर्पित है जो हर परिस्थिति में चिकित्सीय मूल्यों को बनाए रखते हुए व अपना फर्ज निभाते हुए मरीजों को बेहतर से बेहतर इलाज मुहैया करवा रहे हैं। उन्होंने बताया कि सबसे पहले भारत सरकार की ओर से यह दिन वर्ष 1991 में मनाया गया था। प्रोफेसर के.पी. सिंह ने कहा कि कोविड-19 के चलते देश के चिकित्सक, 'फ्रंटलाइन कोरोना वॉरियर्स' की भूमिका अदा कर रहे हैं। वे न केवल जिंदगी ओर मौत के बीच संघर्ष कर रहे लोगों का इलाज कर रहे हैं, बल्कि उन्हें नया जीवन भी दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसके साथ-साथ चिकित्सकों, नर्सों, सुरक्षा कर्मी, पुलिस कर्मी, सफाई कर्मी सहित सामाजिक कार्यकर्ता व संगठन भी इस महामारी के समय कोरोना योद्धाओं की भूमिका निभा रहे हैं और इनका ये प्रयास सराहनीय है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नित्य शक्ति	02.07.2020	--	--

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान : वीसी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने किसानों के लिए बाजरे की फसल संबंधी जारी की हिदायतें

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजरा हरियाणा एवं पुरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आह्वान किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बताया कि बाजरे की फसल सितम्बर के अन्त या अक्तूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमे लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच एच बी 299 एक अधिक लौह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसकेदानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमश: 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एच एच बी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमश: 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमश: 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच एच बी-223, एच एच बी 197, एच एच बी-67 (संशोधित), एच एच बी 226, एच एच बी 234, एच एच बी 272 शामिल हैं।

ऐसे करें खेत की तैयारी : विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि बाजरे की बिजाई जुलाई माह के प्रथम पखवाड़े में उचित होती है, किंतु बारानी इलाके जो बारिश पर निर्भर करते हैं, वहां मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसके अलावा 10 जून के बाद 50 से 60 मिलीमीटर वर्षा होने पर भी बिजाई की जा सकती है। उन्होंने कहा कि किसान खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें और बाद में एक या दो जुताई देशी हल से करें। इसके बाद फौरन सुहागा लगाकर अच्छी तरह तैयार करें ताकि घास-फूस न रहे। बारानी [illegible] पहले खेत के चारों तर[illegible] बनाएं ताकि बारिश [illegible] जमा हो जाए और [illegible] काम आ सके।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	02.07.2020	--	--

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान : प्रो. सिंह

हकृवि ने किसानों के लिए बाजरे की फसल संबंधी जारी की हिदायतें

पांच बजे न्यूज

हिसार। प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजरा हरियाणा एवं पुरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खादान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आह्वान किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बताया कि बाजरे की फसल सितम्बर के अन्त या अक्तूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमे लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच एच बी 299 एक अधिक लौह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसकेदानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एच एच बी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमशः 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच एच बी-223, एच एच बी 197, एच एच बी-67 (संशोधित), एच एच बी 226, एच एच बी 234, एच एच बी 272 शामिल हैं।

बढ़ रही है बाजरे की डिमांड

बाजरें में मुख्यतः 12.8 प्रतिशत प्रोटीन 4.8 ग्राम वसा 2.3 ग्राम रेशे 67 ग्राम कार्बोहायड्रेट एवं खनिज तत्त्व जैसे कैल्शियम (16 मिली ग्राम), लौह (6 मिली ग्राम), मैग्नीशियम (228 मिली ग्राम), फॉस्फोरस (570 मिली ग्राम), सोडियम (10 मिली ग्राम), जिंक (3.4 मिली ग्राम), पोटेशियम (390 मिली ग्राम), कॉपर(1.5 मिली ग्राम), पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाये जाते हैं। बाजरे के दानों का सेवन सुजन रोधी, उच्चरक्तचापरोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट यौगिक हृदयाघात के जोखिम एवं आंत्र के सूजन को कम करने में मदद करते है।

बाजरा में उपयुक्त वर्णित खाद्यान फसलों के मुकाबले सुखा, निम्न उपजाऊ क्षमता, उच्च लवण उक्त भूमि एवं उच्च तापमान के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। अतः इस फसल का उत्पादन ऐसी भूमि में भी किया जा सकता है जहाँ पर अन्य फसल लेना संभव न हो. इसके दानो में ग्लूटेन लगभग न के बराबर होता है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो की सिलिअक, असहिष्णुता, स्व-प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी, और आंतों की पारगम्यता बिमारी का मुख्य कारण है। अतः उक्त बीमारी वाले लोगो को डॉक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप -2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है इसकी इन्ही विशेषताओं के कारण इसे 'न्युट्री सीरियल' नाम दिया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
प्रादेशिकी (देशबन्धु)	02.07.2020	--	--

'संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान'

हिसार, 2 जुलाई (देशबन्धु)। प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खादान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आह्वान किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बतया कि बाजरे की फसल सितम्बर के अन्त या अक्तूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

■ बाजरे के लिए जुलाई का महीना माना जाता है महत्वपूर्ण

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमे लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच एच बी 299 एक अधिक लौह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसकेदानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमश- 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एच एच बी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमश- 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमश: 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच एच बी-223, एच एच बी 197, एच एच बी-67 (संशोधित), एच एच बी 226, एच एच बी 234, एच एच बी 272 शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (यूनिक हरियाणा)	02.07.2020	---	---

H.A.U ने किसानों के लिए बाजरे की फसल संबंधी जारी की हिदायतें

July 2, 2020 • Rakesh • Haryana News

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान : प्रोफेसर के.पी. सिंह

यूनिक हरियाणा हिसार : 2 जुलाई 2020

प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजरा हरियाणा एवं पुरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आह्वान किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बतया कि बाजरे की फसल सितम्बर के अन्त या अक्तूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमे लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच एच बी 299 एक अधिक लौह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसकेदानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमश: 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एच एच बी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म हैं। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमश: 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमश: 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच एच बी-223, एच एच बी 197, एच एच बी-67 (संशोधित), एच एच बी 226, एच एच बी 234, एच एच बी 272 शामिल हैं।

ऐसे करें खेत की तैयारी

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि बाजरे की बिजाई जुलाई माह के प्रथम पखवाड़े में उचित होती है, किंतु बारानी इलाके जो बारिश पर निर्भर करते हैं, वहां मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसके अलावा 10 जून के बाद 50 से 60 मिलीमीटर वर्षा होने पर भी बिजाई की जा सकती है। उन्होंने कहा कि किसान खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें और बाद में एक या दो जुताई देशी हल से करें। इसके बाद फौरन सुहागा लगाकर अच्छी तरह तैयार करें ताकि घास-फूस न रहे। बारानी क्षेत्रों में वर्षा से पहले खेत के चारों तरफ खूब मजबूत मेढ़ बनाएं ताकि बारिश का पानी खेत में ही जमा हो जाए और आगामी फसल के भी काम आ सके।

बीजोपचार अवश्य करें किसान

किसान बाजरे का प्रति एकड़ 1.5 से 2 किलोग्राम बीज बोएं ताकि 60-65 हजार पौधे प्रति एकड़ बारानी अवस्था में तथा 70-75 हजार पौधे सिंचित अवस्था में प्राप्त हो सकें। बिजाई पंक्तियों में करनी चाहिए तथा इनका फासला 45 सैं.मी. रखकर इस प्रकार करें कि बीज 2.0 सैं.मी. से ज्यादा गहराई पर न पड़े। पौधे से पौधे की दूरी 10 से 12 सैं.मी. रहे। यदि बीज पहले से उपचारित न हो तो डाऊनी मिल्ड्यू (जोगिया या हरी बालों वाला रोग) की शुरुआती रोकथाम के लिए बीज को 6 ग्राम मैटालेक्सिल 35 प्रतिशत प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर देना चाहिए। बाजरे में सिफारिश की गई खादों के साथ-साथ बायोमिक्स (एजोटोबैक्टर, एजोस्पाइरिलियम, पी.एस.बी.) का प्रयोग करने से पैदावार में वृद्धि होती है; प्रति एकड़ बीज को 100 मि.ली. बायोमिक्स से उपचारित करना चाहिए। बिजाई के दो से तीन सप्ताह बाद ज्यादा पौधों का विरलन करना तथा जहां कम पौधे हों वहां पर खाली जगह को भरना चाहिए । वर्षा वाले दिन यह काम अति उचित है ताकि एक एकड़ में उचित संख्या में पौधे प्राप्त हो सकें।

निराई-गुड़ाई व खरपतवार नियंत्रण

फसल में खाद मिट्टी परीक्षण के आधार पर दें। बिजाई के समय आधी नाइट्रोजन तथा पूरी फास्फोरस (16 कि.ग्रा. नाइट्रोजन 8 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति एकड़ बारानी क्षेत्रों में तथा 62.5 कि.ग्रा. नाइट्रोजन 25 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति एकड़ सिंचित क्षेत्रों में) तथा शेष नाइट्रोजन की मात्रा सिंचित अवस्था में दो भागों में तीन व पांच सप्ताह बाद प्रयोग करें व बारानी अवस्था में बची हुई आधी मात्रा बिजाई के 20 से 30 दिन के बाद किसी दिन बारिश होने के बाद डालें। बिजाई के तुरन्त बाद 400 ग्राम एट्राजीन प्रति एकड़ 250 लीटर पानी में मिलाकर छिडक़ें। यदि बिजाई के तुरन्त बाद का प्रयोग न कर सकें तो बिजाई के बाद 10 से 15 दिन तक भी उतनी ही मात्रा प्रयोग कर सकते हैं। वर्षा न होने पर फुटाव, फूल आना व दानों की दूधिया अवस्था पर सिंचाई अवश्य करें। बाजरे की फसल में अगर ज्यादा वर्षा हो गई हो तो कुछ घंटों के बाद पानी अवश्य निकाल देना चाहिए।

बढ़ रही है बाजरे की डिमांड

बाजरें में मुख्यत: 12.8 प्रतिशत प्रोटीन 4.8 ग्राम वसा 2.3 ग्राम रेशे 67 ग्राम कार्बोहायड्रेट एवं खनिज तत्त्व जैसे कैल्शियम (16 मिली ग्राम), लौह (6 मिली ग्राम), मैग्नीशियम (228 मिली ग्राम), फॉस्फोरस (570 मिली ग्राम), सोडियम (10 मिली ग्राम), जिंक (3.4 मिली ग्राम), पोटेशियम (390 मिली ग्राम), कॉपर(1.5 मिली ग्राम), पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाये जाते हैं। बाजरे के दानों का सेवन सुजन रोधी, उच्चरक्तचापरोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट यौगिक हृदयाघात के जोखिम एवं आंत्र के सूजन को कम करने में मदद करते है। बाजरा में उपयुक्त वर्णित खाद्यान फसलों के मुकाबले सुखा, निम्न उपजाऊ क्षमता, उच्च लवण उक्त भूमि एवं उच्च तापमान के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। अत: इस फसल का उत्पादन ऐसी भूमि में भी किया जा सकता है जहाँ पर अन्य फसल लेना संभव न हो. इसके दानो में ग्लूटेन लगभग न के बराबर होता है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो की सिलिअक, असहिष्णुता, स्व-प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी, और आंतों की पारगम्यता बिमारी का मुख्य कारण है। अत: उक्त बीमारी वाले लोगो को डॉक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप -2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है इसकी इन्ही विशेषताओं के कारण इसे 'नुट्री सीरियल' नाम दिया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (जीवन आधार)	02.07.2020	---	---

संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसान : केपी सिंह

SHARE 0

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने किसानों के लिए बाजरे की फसल संबंधी जारी की हिदायतें

हिसार,

प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए तैयार हैं। बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खादान्न फसल है। मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सबसे उत्तम समय है परंतु बारानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने किसानों से आहवान किया कि वे अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बताया कि बाजरे की फसल सितम्बर के अन्त या अक्तूबर में पक कर तैयार हो जाती है।

विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बाजरे की मुख्य किस्में

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई बायोफोर्टीफाइड किस्मों का अनुमोदन किया है जिनमें लौह तत्व एवं जिंक अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मात्रा में पाया जाता है। इनमें एच एच बी 299 एक अधिक लौह युक्त (73 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म है। इसकेदानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमश: 15.8 क्विंटल व 40-42 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 80-82 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा एच एच बी 311 किस्म भी अधिक लौह युक्त (83 पीपीएम) संकर बाजरा किस्म है। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमश: 15 क्विंटल व 35.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दोनों किस्में अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 299 व एचएचबी 311 क्रमश: 19.6 व 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच एच बी-223, एच एच बी 197, एच एच बी-67 (संशोधित), एच एच बी 226, एच एच बी 234, एच एच बी 272 शामिल हैं।

ऐसे करें खेत की तैयारी

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि बाजरे की बिजाई जुलाई माह के प्रथम पखवाड़े में उचित होती है, किंतु बारानी इलाके जो बारिश पर निर्भर करते हैं, वहां मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसके अलावा 10 जून के बाद 50 से 60 मिलीमीटर वर्षा होने पर भी बिजाई की जा सकती है। उन्होंने कहा कि किसान खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें और बाद में एक या दो जुताई देशी हल से करें। इसके बाद फॉरन सुहागा लगाकर अच्छी तरह तैयार करें ताकि घास-फूस न रहे। बारानी क्षेत्रों में वर्षा से पहले खेत के चारों तरफ खूब मजबूत मेढ बनाएं ताकि बारिश का पानी खेत में ही जमा हो जाए और आगामी फसल के भी काम आ सके।

बीजोपचार अवश्य करें किसान

किसान बाजरे का प्रति एकड़ 1.5 से 2 किलोग्राम बीज बोएं ताकि 60-65 हजार पौधे प्रति एकड़ बारानी अवस्था में तथा 70-75 हजार पौधे सिंचित अवस्था में प्राप्त हो सकें। बिजाई पंक्तियों में करनी चाहिए तथा इनका फासला 45 सै.मी. रखकर इस प्रकार करें कि बीज 2.0 सै.मी. से ज्यादा गहराई पर न पड़े। पौधे से पौधे की दूरी 10 से 12 सै.मी. रहे। यदि बीज पहले से उपचारित न हो तो डाऊनी मिल्ड्यू (जोगिया या हरी बालों वाला रोग) की शुरुआती रोकथाम के लिए बीज को 6 ग्राम मैटालेक्सिल 35 प्रतिशत प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर देना चाहिए। बाजरे में सिफारिश की गई खादों के साथ-साथ बायोमिक्स (एजोटोबैक्टर, एजोस्पाइरिलियम, पी.एस.बी.) का प्रयोग करने से पैदावार में वृद्धि होती है; प्रति एकड़ बीज को 100 मि.ली. बायोमिक्स से उपचारित करना चाहिए। बिजाई के दो से तीन सप्ताह बाद ज्यादा पौधों का विरलन करना तथा जहां कम पौधे हों वहां पर खाली जगह को भरना चाहिए । वर्षा वाले दिन यह काम अति उचित है ताकि एक एकड़ में उचित संख्या में पौधे प्राप्त हो सकें।

निराई-गुड़ाई व खरपतवार नियंत्रण

फसल में खाद मिट्टी परीक्षण के आधार पर दें। बिजाई के समय आधी नाइट्रोजन तथा पूरी फास्फोरस (16 कि.ग्रा. नाइट्रोजन 8 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति एकड़ बारानी क्षेत्रों में तथा 62.5 कि.ग्रा. नाइट्रोजन 25 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति एकड़ सिंचित क्षेत्रों में) तथा शेष नाइट्रोजन की मात्रा सिंचित अवस्था में दो भागों में तीन व पांच सप्ताह बाद प्रयोग करें व बारानी अवस्था में बची हुई आधी मात्रा बिजाई के 20 से 30 दिन के बाद किसी दिन बारिश होने के बाद डालें। बिजाई के तुरन्त बाद 400 ग्राम एट्राजीन प्रति एकड़ 250 लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें। यदि बिजाई के तुरन्त बाद का प्रयोग न कर सकें तो बिजाई के बाद 10 से 15 दिन तक भी उतनी ही मात्रा प्रयोग कर सकते हैं। वर्षा न होने पर फुटाव, फूल आना व दानों की दूधिया अवस्था पर सिंचाई अवश्य करें। बाजरे की फसल में अगर ज्यादा वर्षा हो गई हो तो कुछ घंटों के बाद पानी अवश्य निकाल देना चाहिए।

बढ रही है बाजरे की डिमांड

बाजरे में मुख्यत: 12.8 प्रतिशत प्रोटीन 4.8 ग्राम वसा 2.3 ग्राम रेशे 67 ग्राम कार्बोहायड्रेट एवं खनिज तत्त्व जैसे कैल्शियम (16 मिली ग्राम), लौह (6 मिली ग्राम), मैग्नीशियम (228 मिली ग्राम), फॉस्फोरस (570 मिली ग्राम), सोडियम (10 मिली ग्राम), जिंक (3.4 मिली ग्राम), पोटेशियम (390 मिली ग्राम), कॉपर(1.5 मिली ग्राम), पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाये जाते हैं। बाजरे के दानों का सेवन सुजन रोधी, उच्चरक्तचापरोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट यौगिक हृदयाघात के जोखिम एवं आंत्र के सूजन को कम करने में मदद करते हैं। बाजरा में उपयुक्त वर्णित खाद्यान फसलों के मुकाबले सुखा, निम्न उपजाऊ क्षमता, उच्च लवण उक्त भूमि एवं उच्च तापमान के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। अत: इस फसल का उत्पादन ऐसी भूमि में भी किया जा सकता है जहाँ पर अन्य फसल लेना संभव न हो. इसके दानो में ग्लूटेन लगभग न के बराबर होता है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो की सिलिअक, असहिष्णुता, स्व-प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, एलर्जी, और आंतों की पारगम्यता बिमारी का मुख्य कारण है। अत: उक्त बीमारी वाले लोगो को डॉक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप -2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है इसकी इन्ही विशेषताओ के कारण इसे 'न्युट्री सीरियल' नाम दिया गया है।